हिन्दी **की साहित्यिक विधाएँ**

पुष्पा महाराज
हिन्दी विभाग
सेमेस्टर 4 (एमजेसी)

हिन्दी साहित्य भारतीय साहित्य परंपरा का एक समृद्ध और सशक्त अंग है। समय, समाज और मानव जीवन की विविध अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने के लिए साहित्य ने अनेक रूप धारण किए हैं। इन्हीं रूपों को साहित्यिक विधाएँ कहा जाता है। साहित्यिक विधाएँ लेखक को अभिव्यक्ति का माध्यम प्रदान करती हैं तथा पाठक को जीवन को समझने की दृष्टि देती हैं। हिन्दी साहित्य में विधाओं का विकास कालानुसार होता रहा है और प्रत्येक विधा ने समाज, संस्कृति, राजनीति तथा मानवीय संवेदनाओं को अपने ढंग से प्रस्तुत किया है।

सामान्यतः हिन्दी की साहित्यिक विधाओं को दो प्रमुख वर्गों में बाँटा जाता है—

1. **काव्य विधाएँ**
2. **गद्य विधाएँ**

इन दोनों के अंतर्गत अनेक उपविधाएँ विकसित हुई हैं।

1. काव्य विधाएँ

काव्य वह साहित्यिक रूप है जिसमें भाव, कल्पना, लय, छंद और अलंकारों के माध्यम से अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती है। हिन्दी काव्य की परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है।

(क) महाकाव्य

महाकाव्य काव्य की सर्वोच्च विधा मानी जाती है। इसमें किसी महान नायक के जीवन, संघर्ष, आदर्श और विजय का व्यापक चित्रण होता है। इसमें कथानक विस्तारपूर्ण, भाषा गंभीर और शैली अलंकृत होती है।
उदाहरण:

- रामचरितमानस – तुलसीदास
- कामायनी – जयशंकर प्रसाद

(ख) खंडकाव्य

खंडकाव्य में किसी कथा या जीवन के किसी एक अंश का वर्णन किया जाता है। यह आकार में महाकाव्य से छोटा होता है।
उदाहरण:

- साकेत – मैथिलीशरण गुप्त

- पल्लव (कुछ अंशात्मक काव्य)

(ग) गीतिकाव्य

गीतात्मकता इस विधा की प्रमुख विशेषता है। इसमें कवि की व्यक्तिगत अनुभूतियाँ, प्रेम, प्रकृति, वेदना और आनंद की अभिव्यक्ति होती है।

उदाहरण:

- निहार – महादेवी वर्मा
- गीतांजलि – रवीन्द्रनाथ ठाकुर (हिन्दी अनुवाद)

(घ) मुक्तक काव्य

मुक्तक स्वतंत्र पदों में रचित होता है। प्रत्येक पद अपने आप में पूर्ण होता है।

उदाहरण:

- बिहारी के दोहे
- रहीम के दोहे

(ङ) प्रबंध काव्य

जिस काव्य में एक संगठित कथा होती है और जो किसी उद्देश्य की पूर्ति करता है, उसे प्रबंध काव्य कहते हैं।

(च) छंदबद्ध और छंदमुक्त कविता

आधुनिक काल में छंदमुक्त कविता का विकास हुआ। इसमें भाव प्रधान होते हैं, छंद की बाध्यता नहीं होती।

उदाहरण:

- अज्ञेय, मुक्तिबोध, केदारनाथ सिंह की कविताएँ

2. गद्य विधाएँ

गद्य साहित्य में भाषा सरल, स्वाभाविक और विचार प्रधान होती है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में गद्य विधाओं का विशेष विकास हुआ।

(क) उपन्यास

उपन्यास आधुनिक युग की सबसे लोकप्रिय विधा है। इसमें जीवन का व्यापक चित्रण होता है। समाज, राजनीति, मनोविज्ञान और संस्कृति का यथार्थ रूप इसमें देखने को मिलता है।

प्रमुख उपन्यासकार:

- प्रेमचंद – गोदान, गबन
- फणीश्वरनाथ 'रेणु' – मैला आँचल
- यशपाल – झूठा सच

(ख) कहानी

कहानी संक्षिप्त कथात्मक विधा है। इसमें सीमित पात्र, घटना और प्रभाव होता है। आधुनिक हिन्दी कहानी ने समाज की समस्याओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।

प्रमुख कथाकार:

- प्रेमचंद, अमरकांत, मोहन राकेश, भीष्म साहनी

(ग) नाटक

नाटक संवाद और अभिनय पर आधारित विधा है। यह मंचीय प्रस्तुति के लिए लिखा जाता है।

प्रमुख नाटककार:

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र
- जयशंकर प्रसाद – स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी
- मोहन राकेश – आषाढ़ का एक दिन

(घ) निबंध

निबंध विचार प्रधान विधा है। इसमें लेखक अपने विचारों को तार्किक, भावात्मक या व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है।

प्रमुख निबंधकार:

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
- हजारीप्रसाद द्विवेदी

(ङ) आत्मकथा

आत्मकथा में लेखक अपने जीवन का सत्य वर्णन करता है।

उदाहरण:

- आपबीती – महात्मा गांधी

(च) जीवनी

जीवनी में किसी महान व्यक्ति के जीवन का वर्णन किया जाता है।

उदाहरण:

- कलम का सिपाही – अमृतराय

(छ) यात्रा-वृत्तांत

इस विधा में यात्रा के अनुभवों का वर्णन होता है।

उदाहरण:

- राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य

(ज) रेखाचित्र

रेखाचित्र किसी व्यक्ति या घटना का संक्षिप्त और सजीव चित्रण करता है।

उदाहरण:

- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र

(झ) संस्मरण

संस्मरण में लेखक अपने जीवन से जुड़े स्मरणीय व्यक्तियों या घटनाओं का वर्णन करता है।

3. आधुनिक और नवीन विधाएँ

समय के साथ हिन्दी साहित्य में नई विधाओं का भी विकास हुआ है—

- रिपोर्ताज
- डायरी
- लघुकथा
- व्यंग्य
- ब्लॉग और डिजिटल साहित्य

इन विधाओं ने साहित्य को समकालीन जीवन से जोड़ा है।

उपसंहार

हिन्दी की साहित्यिक विधाएँ मानव जीवन की विविध अनुभूतियों की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। प्रत्येक विधा का अपना स्वरूप, उद्देश्य और महत्त्व है। काव्य विधाएँ जहाँ भावनाओं और कल्पना को प्रधानता देती हैं, वहीं गद्य विधाएँ यथार्थ, विचार और समाज की समस्याओं को सामने लाती हैं। बदलते समय के साथ हिन्दी साहित्य की विधाएँ भी निरंतर विकसित हो रही हैं। यही

विकासशीलता हिन्दी साहित्य को जीवंत और समृद्ध बनाती है।